10

अहाब

नरक में तय हुई एक शादी

वचन पाठ: 1 राजाओं 16:29-22:40

विकासवादी लोग यह सोच कर संतुष्ट हो जाते हैं कि हमें मिला मानवीय जीवन, करोड़ों वर्ष पूर्व एक अणु से बना है। विकास की इस किस्म पर किसी विचारवान व्यक्ति द्वारा केवल इसलिए विश्वास नहीं किया जा सकता कि ईमानदारी से दिया गया तर्क इस बात पर ज़ोर देता है कि बिना सहायता के तत्व का एक अणु से किसी मनुष्य में उछलकर जाना एक असम्भावित छलांग है। मानवीय प्राणी इतना अधिक जटिल है कि मनुष्य के दिमाग में का एक अलग अणु मनुष्य द्वारा बनाए जा सकने वाले जटिल से जटिल कम्प्यूटर से कहीं अधिक उलझन भरा है। कौन मान सकता है कि एक सैल बिना आश्चर्यकर्म यानी ईश्वरीय सहायता के एक मानवीय जीव में बदल गया और एक आत्मा के साथ पूर्ण होता है, जो सोचती, प्रेम करती, घृणा करती और स्वप्न देखती है? विश्वास की पद्धति के रूप में विकासवाद की शिक्षा अनुसंधान की प्रयोगशाला यानी उस जगह पर जहां असली विज्ञान की परख की जाती है, पहुंचने से पहले ही दम तोड़ देती है।

अविश्वसनीय होने के अलावा विकासवाद जिस एक और टेस्ट में फेल होता है, वह है विवाह और घर के लिए इसके पास कोई मान्य व्याख्या न होना। परिवार का आधार एक नहीं बल्कि दो जन अर्थात नर और नारी हैं, जो एक-दूसरे से अलग होने पर भी एक-दूसरे से मेल खाते हैं, जिन्हें प्रेम और समर्पण के द्वारा इकट्ठे रहने के लिए लाया गया है। घर का अस्तित्व विकासवादी व्यक्ति की परेशानियों को और बढ़ा देता है। उसे दोनों अर्थात नर और नारी के विकास का उत्तर देना पड़ेगा, जो विकासवादी परिपक्वता को एक ही समय पर पहुंचाकर घर की स्थापना की व्याख्या हो। एक ही समय में दोनों के विकास की आवश्यकता विकासवाद को और भी न मानने के योग्य बना देती है।

सच्चाई यह है कि जीवन की सब से सुन्दर बातों में से एक मसीही घर है। यह कहने के अलावा कि यह मनुष्य और समाज को परमेश्वर का दान है, इसकी और व्याख्या नहीं की जा सकती। जब हम बाइबल को खोलते हैं, जो हमें यह बताने के लिए परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया वचन है कि सब चीज़ें परमेश्वर की ओर से दी गई हैं तो हमें तुरन्त घर की परमेश्वर की सृष्टि के बारे में उत्पत्ति की पुस्तक में बताया जाता है (उत्पत्ति 2; 3)। इसका विकास नहीं हुआ, बल्कि इसे रचा गया। चीज़ों के आरम्भ का विवरण जीवन की उन सब बातों से मेल खाता है, जिनका हमें पता है, इसलिए हमारे लिए इस पर विश्वास करना और मानना आसान होना चाहिए।

उत्पत्ति की पुस्तक के विवरण के अनुसार घर हमें परमेश्वर की करुणा के एक कार्य के रूप में ही नहीं दिया गया था, बल्कि इसे हमारी स्वतन्त्र नैतिक शाखा अर्थात हमारे आत्मिक स्वभाव के अन्दर रखा गया था। यानी हमें परिवार रखने की ज़िम्मेदारी दी गई है, परन्तु यह हमें चुनना है

कि किस से विवाह करना है और हमारा घर कैसा होगा। अपने सब अर्थों और आश्चर्य के साथ घर वैसा ही होगा, जैसी हमारी पसन्द होगी। हम में से हर कोई पृथ्वी पर स्वर्ग या पृथ्वी पर नरक जैसा घर पाने का निर्णय ले सकता है। पसन्द अपनी है।

हम कई बार किसी दम्पत्ति की बात करते हैं, जो कई बार आदर्श लगता है, ''यह जोड़ी तो स्वर्ग में ही बनी लगती है।'' हम कभी कहते तो नहीं हैं, लेकिन इसका उलट भी सच होता है। कुछ लोगों द्वारा कमज़ोर पसन्द के कारण उनका वैवाहिक जीवन तबाह हो सकता है। हम कह सकते हैं कि ऐसा विवाह नरक में तय हुआ था। यानी शैतान ने उन दोनों को विवाह करने का निर्णय लेने के लिए प्रभावित किया और उस दम्पत्ति के व्यवहार को प्रभावित करता है; जिस कारण उनका वैवाहिक जीवन परमेश्वर के नहीं, बल्कि शैतान के नमूने को मान रहा है।

वचन में ऐसे विवाह का एक और उदाहरण है। ऐसा विवाह जो दूसरे सब विवाहों से ऊपर है, अहाब और ईज़ेबेल का विवाह। यह इस्राएल के राजा ओम्री के पुत्र और सोर के राजा इतबाल की पुत्री के बीच एक शाही विवाह था। अहाब इस्राएल का आठवां राजा था, जिसका सामरिया में बाइस वर्ष का शासन 874 से 853 ई.पू. तक चला। अहाब और ईज़ेबेल के विवाह ने इस्राएल में रहने वाली हर आत्मिक प्रवृत्ति को बहुत प्रभावित किया। शायद ऐसा दुष्ट प्रभाव देश में कभी किसी घर में नहीं देखा गया था।

आइए इस विवाह को इस दृष्टिकोण से देखते हैं कि यह टेढ़े रास्ते पर क्यों चला और देश के साथ-साथ अहाब और ईज़ेबेल के लिए इतना विनाशकारी क्यों बन गया।

गलत कारण के लिए किया गया

पुराने नियम के समयों में राजाओं द्वारा कई बार विवाह का इस्तेमाल दो देशों के बीच संधि के लिए भी किया जाता था। जब एक राजा की बेटी दूसरे राजा को ब्याह में भी जाती थी तो यह उन दो देशों के बीच मिलकर काम करने केप्रयास का सूचक होता था। बेशक, वचन में यह स्पष्ट नहीं कहा गया, परन्तु लगता है कि अहाब और ईज़ेबेल का विवाह मौन सहमति का विवाह था, यानी इस्राएल और सोर को जोड़ने के लिए ओम्री और इतबाल के समझौते पर मुकुट था। ऐसा कदम शायद दो देशों के सम्बन्धों को मज़बूत बनाने और समझौते के लिए अस्थाई प्रबन्ध हो सकता है, परन्तु इसमें यह नहीं कहा गया कि विवाह का इस्तेमाल इस प्रकार से करने से मेल की प्रतिष्ठा और महत्व कम हो जाता है, जो इसे केवल सौदेबाज़ी बना देता है। दो जीवनों को जोड़ने के लिए परमेश्वर द्वारा दिया गया सुन्दर विवाह ही है, जो इसे एक ''औज़ार'' बना देता है कि इसके इस्तेमाल से कोई भी लाभ लिया जाए। परमेश्वर ने विवाह को दो जनों की खुशी के लिए बनाया था न कि लोगों के या देशों के व्यापारिक या आर्थिक लाभ के लिए।

विवाह का मूल उद्देश्य परिवार का साथ और स्थापना की दो बातों में समझाया जा सकता है। यह उद्देश्य विवाह की सृष्टि की ईश्वरीय पुस्तक में पता चल सकता है:

> सो आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उस से मेल खा सके (उत्पत्ति 2:20)।

तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उस ने उसकी एक पसुली निकालकर उसकी संती मांस भर दिया। और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उस ने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया। और आदम ने कहा अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है: सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है (उत्पत्ति 2:21-23)।

इस कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बनें रहेंगे (उत्पत्ति 2:24)।

तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उनको आशीष दी: और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, ... (उत्पत्ति 1:27, 28)।

विवाह के लिए ईश्वरीय योजना को विवाह करने वाले दो जनों को हानि पहुंचाकर और उस विवाह से दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव की हानि के बिना बदला या तोड़ा मरोड़ा नहीं जा सकता। विवाह में, जो सब सम्बन्धों से मज़बूत और घनिष्ठ है, धन, स्थिति, पद या किसी और बेकार उद्देश्य के लिए प्रवेश करने वाला जो भी हो वह विवाह के लिए परमेश्वर की योजना को खराब करता है।

बाइबल के अनुसार विवाह समाज का आधार, यानी वे ईंटें हैं, जिनके ऊपर सब लोग चल कर अपने जीवन बना सकते हैं। विवाह को निकाल दें, तो समाज रहेगा ही नहीं, विवाह को बिगाड़ दें तो मनुष्य जाति पर हव प्रकार का क्लेश और हर प्रकार की बीमारी आ पड़ेगी।

अहाब और ईज़ेबेल का विवाह गलत उद्देश्य के साथ गलत ढंग से हुआ था। इस कठिनाई ने उनके विवाह को प्रभावित किया, परन्तु बाइबल इसका कोई विवरण नहीं देती, सिवाय उसके विवाह को बढ़ रही त्रासदी के रूप में दिखाने के। उनके इकट्ठे होने का कारण शायद उनके विवाह की बर्बादी में बड़ा योगदान था। दुष्ट उद्देश्यों के लिए किया गया विवाह था कोई भी प्रबन्ध परेशानी का कारण ही बनता है।

गलत सम्बन्ध से नियंत्रित

उनके विवाह की स्पष्ट विशेषता, जिसने इसमें कड़वाहट और दूरी पैदा कर दी वह विवाह में अहाब और इज़ेबेल का सम्बन्ध था। आरम्भ से ही परमेश्वर ने घर का मुखिया होने के लिए पति को, और घर की रानी होने के लिए पत्नी का चयन किया था (इफिसियों 5:23, 25; 1 तीमुथियुस 2:11-15)। परमेश्वर का प्रबन्ध स्त्री और पुरुष दोनों की खुशी और बच्चों की सर्वोतम भलाई के लिए है। विवाह पति और पत्नी को विवाह को सुन्दर बनाने के लिए स्वत: ही पर्याप्त और कार्यकारी सम्बन्ध में प्रवेश नहीं करा देता। पवित्र शास्त्र द्वारा जिस सम्बन्ध की आवश्यकता बताई गई है उसकी पति और पत्नी दोनों को समझ होना और उसे बनाना चुनना आवश्यक है।

एक दृष्टिकोण से अहाब को प्रभावशाली राजा माना जा सकता है। एक बात के लिए उसने दक्षिणी राज्य से शांतिपूर्ण सम्बन्ध बनाए। अच्छे दक्षिणी राजा यहोशापात के साथ यह समझौता अहाब के लिए सहायक हुआ और देश पर इसके कुछ अच्छे प्रभाव पड़े। बाइबल में अहाब को एक योग्य प्रशासक के रूप में दिखाया गया है जिसने अपने देश के उद्यम को बनाने में अगुआई दी जिससे देश ने आर्थिक विकास किया। उसने अपने पीछे उन नगरों के साथ-साथ जो उसने बनाए, गढ़ बनाए और किसी आक्रमणकारी से बचाव के लिए तैयार किया था।

> अहाब के और सब काम जो उस ने किए, और हाथीदांत का जो भवन उस ने बनाया, और जो-जो नगर उस ने बसाए थे, यह सब क्या इस्राएली राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है ? (22:39)।

इसके अलावा अहाब एक मजबूत, चतुर सिपाही लगता था, जो सेना की अगुआई प्रभावशाली ढंग से कर सकता था। दो बार उसने यहोवा के ''एक भविष्यवक्ता'' की भविष्यवाणी के अनुसार अरामी सेनाओं को हराया था (20:1-34)।

अपने घर का अच्छा अगुआ होने के बावजूद अहाब ने तीन बड़े नुक्स थे। पहला, उसने अपने घर में अगुआई नहीं दी। वह एक *कमज़ोर* पति था। किसी ने एक आदमी से पूछा, ''क्या आप जोरू के गुलाम हैं?'' उसका उत्तर था, ''एक मिनट रुकना। मैं अपनी पत्नी से पूछकर बताता हूं।'' वह पति अहाब की तस्वीर है। वह यह कभी न मानता, परन्तु सच्चाई यह है कि ईज़ेबेल ने उसे ऐसे वश में किया हुआ था जैसे घोड़े को लगाम लगाई जाती है। अहाब जितना दुष्ट था, उससे अधिक कमज़ोर था। उसने बुरे उद्देश्यों और योजनाओं में ईज़ेबेल को उसे अगुआई देने दी। आर. जी. ली की भाषा का इस्तेमाल करें तो ईज़ेबेल शैतान की वह सान थी, जिस पर वह अपने बुरे कामों को करने के लिए अपने दुष्ट हथियारों को तेज़ करता था। वह अपने पति और देश पर शासन करती थी, और उसने पूरे इस्राएल में बाल की पूजा आरम्भ करवा दी, जिसे वह मानती थी (21:25)।

अहाब का दूसरा नुक्स *स्वार्थ* था। वह दुष्टता की उस सीमा का एक नमूना है, जिस तक कोई स्वार्थी व्यक्ति जा सकता है। नाबोत और उसकी दाख की बारी के प्रति उसका व्यवहार उसके स्वार्थी होने का एक उदाहरण है (21:1-16)। वह नाबोत की दाख की बारी चाहता था, जो जड़ी बूटियों के बगीचे के लिए उसके महल के पास थी। उसकी यह इच्छा उसका जुनून बन गई। यह उसके दिलो-दिमाग पर छा गई। इसने उसे पागल कर दिया। दाख की बारी को पाने के उसके जायज प्रयासों में असफल होने के बाद वह अपने महल में जाकर एक बिगड़ैल बच्चे की तरह खीज गया। ईज़ेबेल को जब पता चला कि वह परेशान है, तो वह उसके पास आकर कहने लगी, ''मैं आपको यह लेकर दूंगी। अब मुझ पर छोड़ दें।''

उसने उस दाख की बारी को पाने के लिए नाबोत को न्यायिक हत्या के द्वारा मार डालने का आदेश भेजा। अहाब को मालूम था कि वह क्या कर रही है; परन्तु दाख की बारी के लिए अपनी शैतानी इच्छा से प्रेरित उसने उसे रोका नहीं। अहाब ने हत्याएं नहीं कीं। उसके हाथों ने उनका लहू नहीं बहाया, परन्तु उसने ईज़ेबेल की योजनाओं में हस्तक्षेप नहीं किया। जब उसे समाचार मिला

कि हत्याएं हो गई हैं और दाख की बारी अब उसकी हो गई है, तो उसने तुरन्त एक लड़के की तरह जो यह पता चलने पर कि डाकिए द्वारा लाए गए डिब्बे में उसके लिए उपहार है, झपट पड़ा। लगा नहीं कि अहाब को इस बात का ध्यान था कि नाबोत और उसके पुत्र उसकी स्वार्थ की इच्छा की तृप्ति के लिए मार डाले गए हैं। अहाब के लिए हैरानी हुई कि दाख की बारी में एलिय्याह ने उससे भेंट कर उसे उस पर परमेश्वर के होने वाले न्याय की घोषणा की। एलिय्याह की बातें सुनकर राजा कांप उठा:

> ... यहोवा यों कहता है, कि जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का लहू चाटा, उसी स्थान पर कुत्ते तेरा भी लहू चाटेंगे (21:19)।
>
> और ईज़ेबेल के विषय में यहोवा यह कहता है, कि यिज्रेल के किले के पास कुत्ते ईज़ेबेल को खा डालेंगे (21:23)।

कम से कम, कहने के लिए तो इस घोषणा ने अहाब का ध्यान खींचा। उसने शोक जताते हुए प्रतिक्रिया दी और टाट लपेट लिया (21:27) और परमेश्वर ने कहा, ''मैं वह विपत्ति उसके जीते जी उस पर न डालूंगा परन्तु उसके पुत्र के दिनों में मैं उसके घराने पर वह विपत्ति भेजूंगा'' (21:29)। परमेश्वर ने न्याय के पूरे कथन को नहीं हटाया, परन्तु उसने इसके कुछ भाग को हटा लिया (22:37, 38)।

अहाब की एक और कमज़ोरी यहोवा की आराधना के बारे में उसका डावांडोल होना था। उसका *धार्मिक व्यक्तित्व चूर-चूर* था। उसने सच्चे परमेश्वर की आराधना कभी छोड़ी नहीं, पर बाल की पूजा करना भी चुन लिया। उसने ईज़ेबेल को अपने मूर्तिपूजक धर्म के लिए ऊंची जगहें बनाने दीं। बाइबल कहती है कि अहाब ने बुराई करने केलिए ''अपने आप को बेच दिया।'' यानी उसने दुष्टता के आगे अपने आप को पूरी तरह से सौंप दिया:

> सचमुच अहाब के तुल्य और कोई न था जिसने अपनी पत्नी ईज़ेबेल के उक्साने पर वह काम करने को जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अपने को बेच डाला था वह तो उन अमोरियों की नाईं जिनको यहोवा ने इस्राएलियों के सामने से देश से निकाला था बहुत ही घिनौने काम करता था, अर्थात मूर्तों की उपासना करने लगा था (21:25, 26)।

आइए उसकी इन सभी कमज़ोरियों को मिलाकर देखते हैं कि उससे क्या निकलता है। इसके मिश्रण से एक ऐसा परिवार निकला, जो एक दुष्ट स्त्री के वश में और उसके द्वारा चलाया जाता था, जिसका मन नरक द्वारा आग पर रखा गया था और यहोवा की आराधना को खत्म करने के लिए दृढ़ संकल्प था। इसका परिणाम इस्राएल के लिए बुरा था क्योंकि अहाब भ्रष्ट हो गया; ईज़ेबेल ने लगभग पूरी तरह से अपने शैतानी धर्म को मनवा लिया; उनका घर बुराई की हौदी बन गया और देश सबसे निचले आत्मिक उतराव में डूब गया था।

हाल ही में मैं ऐसे एक भाई से बातचीत कर रहा था, जिसका विवाह साठ साल पहले एक बहुत अच्छी स्त्री से हुआ था। उन्होंने मुझे अपनी सालगिराह में आमन्त्रित किया था। उन्हें बधाई

देने के बाद मैंने उस भाई से पूछा, ''आप अपने वैवाहिक जीवन की सफलता का श्रेय किसे देते हैं।'' उसने खीसें निकालते हुए मुझे यह कहानी बताई, ''शादी के बाद, हम ने समझौता किया कि सब छोटे-छोटे फैसले वह लेगी और बड़े फैसले मैं लूंगा। हमारे विवाह को पैंसठ साल हो गए हैं और आज तक बड़ा फैसला लेने की नौबत ही नहीं आई!'' वह भाई मेरे साथ मज़ाक कर रहा था और हम इस बात पर खूब हंसे; परन्तु उसकी कहानी का एक गम्भीर पहलू भी है। घर में पत्नी या मां को सब फैसले लेने देंगे तो वह घर वैसा घर नहीं बन सकता, जैसा परमेश्वर ने इसे बनाना चाहा था। यह घर असफल हो जाएगा क्योंकि इसमें वास्तविक पति, पिता या मुखिया नहीं है। इसका एक दु:खद उदाहरण अहाब और ईज़ेबेल हैं। यदि हमारे पास देखने वाली आंखें और समझने वाले मन हैं तो हम इनसे अवश्य सीख लेंगे।

परमेश्वर ने पति और पत्नी को घर की सफलता और सुन्दरता के लिए ज़िम्मेदारियां दी हैं। जब उसकी योजनाओं को भुलाकर तोड़ दिया जाता है, चाहे जिस भी कारण से हो तो घर काटने को दौड़ता है और प्रेम और शान्ति की नींव हिल जाती है, और देश नष्ट हो जाता है।

गलत धर्म से भ्रष्ट

तीसरा कारण, जिससे हम कह सकते हैं कि अहाब और ईज़ेबेल का विवाह नरक में तय हुआ था वह यह है कि इसने गलत धर्म अर्थात बालवाद के सम्प्रदाय की वकालत की थी। परमेश्वर का केवल एक ही धर्म है, और इसे किसी भी प्रकार से ठुकराना उसकी आज्ञा को तोड़ना और विश्वास का त्याग है। बालवाद को मानना झूठ को स्वीकृति है।

ईज़ेबेल का चरित्र आरम्भ से अन्त तक दुष्ट ही था, परन्तु अहाब अधपके केक की तरह था, जो केवल एक ओर से पका था। उसने यहोवा की आराधना करना छोड़ा नहीं और यह उसके द्वारा अपने बच्चों को दिए नामों से पता चलता है: यहोराम (''यहोवा ऊंचा हुआ'') और अहज्याह (''यहोवा मजबूत है'')। उसने ओबद्याह नामक एक सेवक रखा, जो यहोवा का एक श्रद्धालु विश्वासी था। इस प्रकार नाम और अंगीकार से अहाब यहोवा का उपासक ही था। उसका पाप यह नहीं था कि उसने बाल के लिए यहोवा को पूरी तरह से त्याग दिया था बल्कि यह था कि उसने दोनों की सेवा करने की कोशिश की (18:21)। ईज़ेबेल सम्भवतया बाइबल की सब से दुष्ट स्त्री बन गई। वह बिना किसी मुकाबले के दुष्टता का कोई भी पुरस्कार जीत सकती थी। उसने न केवल अपने देवता को इस्राएल में लाना चाहा, बल्कि वह चाहती थी कि यहोवा की उपासना की जगह इस्राएल में उसी का राज हो और लोग उसी को मानें। तन-मन से दुष्ट उसने परमेश्वर के नबियों को मरवाने तक की कोशिश की (19:2)। ईज़ेबेल निरंकुश और उग्र स्वभाव की थी और अहाब कमज़ोर और बिना साहस के था। इसलिए उसका भविष्य ईज़ेबेल के साथ उसके विवाह से तय हुआ।

अहाब के साथ विवाह के समय ईज़ेबेल इस्राएल में बाल के 450 भविष्यवक्ता ले आई। वह एक मूर्तिपूजक प्रचारक, श्रद्धालु और गम्भीर थी। यारोबाम का विश्वास से पहले फिर जाना, दान और बेतेल में पूजा स्थलों की स्थापना और सोने के बछड़ों की अनुमति देना ही काफी गम्भीर था, परन्तु बाल के सम्प्रदाय को लाना उससे भी खतरनाक। इससे धार्मिक वेश्यापन सहित पतन, कामुक पर्वों सहित ईश्वरीयता एकेश्वरवाद से बहुदेववाद में बदल गया। इस्राएल में ईज़ेबेल का

आना इस्राएल के इतिहास में एक निर्णायक बात थी। उसके प्रभाव के कारण उसे इस्राएल सदा के लिए मूर्तिपूजा के घोर अन्धकार में डूब गया।

यहोवा का विश्वासी होने के बावजूद अहाब ने ईज़ेबेल की इच्छाओं को मौन स्वीकृति दे दी। और उसने इस्राएल को मूर्तिपूजक धर्म के सबसे खतरनाक चाबुक से मारा, जो अभी तक उन्हें नहीं पड़ा था। केवल यही कहा जा सकता है कि नरक में तय हुई शादी देश के लिए बर्बादी बन गई।

पूरी बाइबल में इस सच्चाई का संकेत है कि मसीही व्यक्ति को मसीही से ही विवाह करना चाहिए और अपने घर में मसीही जीवन पर ही ज़ोर दिया जाना चाहिए। यहोवा की आराधना जीवन की छोटी-सी पसन्द नहीं है बल्कि खुशी और वफादारी के लिए निर्णायक और मुख्य बात है। कोई भी परिवार जो यहोवा की गम्भीर आराधना को बलिदान करता या या उसकी उपेक्षा करता है वह परमेश्वर की आशीष को त्याग देता है और शैतान को उस घर में स्थाई अतिथि-गृह दे देता है।

हर जवान पुरुष को केवल विश्वासी मसीही स्त्री से जो अपने घर में परमेश्वर को प्राथमिकता देने को तैयार हो, विवाह करने के लिए जवानी में निर्णय लेकर गलती से किए जाने वाले विवाह का बीमा करवा लेना चाहिए। परमेश्वर की वफादार होने की इच्छुक स्त्री के बजाय किसी और से विवाह करने के लिए अहाब को किसी और बात ने प्रेरित नहीं किया होगा। ईज़ेबेल जैसी स्त्री से विवाह का विचार उसके मन में कभी नहीं आना चाहिए था।

सारांश

तो यहां एक विवाह था, जो नरक में हुआ। क्या इससे आप के रोंगटे खड़े होते हैं? गलत कारण के लिए धारण किया गया, गलत सम्बन्ध से नियन्त्रित और गलत धर्म से भ्रष्ट इस विवाह ने इस्राएल को बूचड़खाने में पहुंचा दिया। शैतान ने इस राजा और रानी के द्वारा अपना रास्ता निकाल लिया था।

इस विवाह ने न केवल लगभग बर्बाद कर दिया बल्कि अहाब की मृत्यु का कारण भी बना। बुरा विवाह आपकी हत्या कर सकता है। इसने अहाब को मार दिया। ईज़ेबेल की दुष्टता के कारण अहाब की मृत्यु परमेश्वर की ओर से न्याय था (22:1-22)। अहाब और यहोशापात गिलाद के रामोत को वापस लेने के लिए जिस पर सीरियाई लोगों का कब्जा था, मिल गए। यहोशापात ने कहा, ''आज यहोवा की इच्छा मालूम कर ले'' (22:5)। अहाब चार सौ झूठे नबी ले आया और उन सबने कहा, ''चढ़ाई कर क्योंकि प्रभु उसको राजा के हाथ में कर देगा'' (22:6)। उनमें से एक सिदकिय्याह ने लोहे के सींग बनवाए और उन्हें यह घोषणा करते हुए कि ऐसे ही सींगों से वे सीरिया के लोगों को मारेंगे, उसके सिर पर रख दिए (2 इतिहास 18:10, 11)। यहोशापात ने पूरी समझ से कहा, ''क्या यहां यहोवा का और भी कोई नबी नहीं है जिस से हम पूछ लें?'' (22:7)। एक नबी था, मीकायाह, जिसने वही बोलना था, जो यहोवा ने उसे बताना था। जो सेवक उसे लेकर आया, उसने उसे झूठे नबियों की हां में हां मिलाने का आग्रह किया, जो सब एक ही बात बोल रहे थे। एक अर्थ में मीकायाह ने कहा, ''जो कुछ यहोवा मुझसे कहे, वही मैं कहूंगा'' (22:14)।

पहले तो उसने यह कहते हुए झूठे भविष्यवक्ताओं का मज़ाक उड़ाया, ''हां, चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो और यहोवा उसको राजा के हाथ में कर दे।'' फिर उसने उन्हें सच्चाई बताई:

> मुझे समस्त इस्राएल
> बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों के समान
> पहाड़ों पर, तितर-बितर देख पड़ा,
> और यहोवा का यह वचन आया, ''वे तो अनाथ हैं;
> अतएव वे अपने-अपने घर कुशलक्षेम से लौट जाएं'' (22:17)।

मीकायाह उन्हें उस दर्शन के बारे में बता रहा था, जो उसने युद्ध के विषय में देखा था। उसने कहा कि उसने परमेश्वर के सामने से आत्माओं को आते देखा था। परमेश्वर ने पूछा था कि अहाब को युद्ध में जाने के लिए कौन प्रेरित करेगा। एक आत्मा ने उसे सब भविष्यवक्ताओं में झूठी आत्मा भेजकर उसे लड़ाई में जाने को प्रेरित करने की पेशकश की और परमेश्वर ने कहा कि ''जाकर ऐसा ही कर'' (22:22)। ऐसी भविष्यवाणी से चिढ़कर सिदकिय्याह ने मीकायाह को थप्पड़ मार दिया। मीकायाह ने उसे प्रतीक्षा करने और इसका परिणाम भुगतने के लिए कहा। फिर उसे मालूम होना था कि उसे किसने सच बताया। मीकायाह को जेल में डाल दिया गया, जहां उसे लड़ाई खत्म होने और राजा के सुरक्षित लौट आने तक दु:ख की रोटी और पानी दिया जाना था (22:26, 27)।

मीकायाह की भविष्यवाणी से परेशान अहाब ने लड़ाई में जाने के लिए भेष बदल लिया। युद्ध के आरम्भ में ही सीरिया के राजा ने बत्तीस जवानों को केवल अहाब का पीछा करने का आदेश दिया। उन्होंने यह सोचकर कि वह अहाब है, यहोशापात को मार दिया। एक सिपाही ने ''अटकल'' से तीर छोड़ा। उसे ''अनाम, बिना निशाने के तीरंदाज'' कहा गया है। परमेश्वर द्वारा किए उपाय के राडार से अगुआई पाकर उसका तीर हवा में गया और अहाब को लगकर उसे वहीं ढेर कर दिया। वह घायल होकर उसी शाम मर गया। परमेश्वर का न्याय पूरा हो गया। रथ से खून साफ किए जाने से पहले, कुत्तों ने आकर इसे चाट लिया, बिल्कुल एलिय्याह की भविष्यवाणी के अनुसार। अहाब की मृत्यु और न्याय को देखकर तुरन्त हमें ध्यान आता है कि इसका कारण नरक में हुई शादी थी।

परमेश्वर ने हमें विवाह दिया है और उसने इसे हमारी नैतिक पसन्द की छूट के मापदण्ड के भीतर रखा है। इसलिए आप अहाब की तरह ही मूर्खतापूर्ण पत्नी का चयन कर सकते हैं, और उसके द्वारा नष्ट हो सकते हैं, या आप स्वर्गीय बुद्धि का इस्तेमाल करके पत्नी होने के लिए एक मसीही स्त्री को चुनकर पृथ्वी पर स्वर्ग बना सकते हैं और प्रेम के उस वास में स्वसार के आने वाले स्वर्ग में सब से बढ़िया प्रोत्साहन पा सकते हैं।

सीखने के लिए सबक:
विवाह स्वर्ग में होना चाहिए न कि नरक में।